ग्रामोभ्युदयादेव देशोभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे | निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 25 | अंकः 63 | बुलेटिन अवधिः 14–18 दिसम्बर 2016 | दिनः मंगलवार | दिनाँकः 13 दिसम्बर 2016

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	14–12–2016	15–12–2016	16–12–2016	17–12–2016	18–12–2016
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	17	17	17	16	16
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	07	07	08	08	06
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	साफ	साफ	साफ
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	90	90	90	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	45	45	45
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	08	10	10	08	08
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (06 से 12 दिसम्बर, 2016 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ कही–कही घने बादल छाये रहे व 0.0 मिमी0 वर्षा हुई तथा अधिकतम तापमान 17.2 से 19.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 5.7 से 8.5 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- पाला/कोहरा पड़ने की स्थिति में समय–समय पर सिंचाई करें।
- गेहूँ की बुवाई करें। फसलों की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवश्य करें।
- गेहूँ के बीज का उपचार कार्बोक्सिन 2ग्राम/किग्रा से या टेबूकुनाजोल 1.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- दलहनी फसलों हेतु थीरम 2 ग्राम + कार्बन्डाजीन 1 ग्राम/किग्रा बीज तथा तिलहनी फसलों में मैटालेक्जिल 6 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें।

- गेहूँ एवं जौ की बुवाई के तुरंत बाद या 3 दिन के अंदर उचित नमी की अवस्था में पेन्डीमेथिलीन 30 ईसी की 2.5 से 3.3 लीटर मात्रा को 750 लीटर पानी में घोल बनाकर अथवा बुवाई के 25–30 दिन बाद क्लोडिनाफॉस + मैडसल्फेरॉन (वैस्टा) शाखनाशी की 400 ग्राम दवा को 500 लीटर पानी में या सल्फोसल्फेरॉन + मैटसल्फेरॉन की 40 ग्राम मात्रा 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। जिससे एक वर्षीय घासकुल एवं कुछ चौड़ी पत्ति वाले खरपतवारों का नियंत्रण किया जा सके।
- जैविक खेती करने वाले किसान भाई सभी फसलों हेतु ट्राइकोडर्मा हरजियानम + सोडोमोनास के 5–5 ग्राम / कि0ग्रा0 बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। तथा पोषक तत्वों की पूर्ति वर्मीकम्पोस्ट या सड़ी हुई गोबर की खाद एवं जैव उर्वरक के द्वारा करें। भूमजनित बीमारियों की रोक–थाम के लिए 250ग्राम ट्राइकोडर्मा + 250 ग्राम सेडोमोनास जैव अभिक्रता से प्रति क्विंटल की दर से वर्मीकम्पोस्ट एवं गोबर की खाद को उपचारित कर एक सप्ताह के लिए छाया में रखें तथा बुवाई से पूर्व खेत में अच्छी प्रकार से मिला दें।
- दलहनी फसलों में खरपतवार नियंत्रण हेतु अगर मजदूर उपलब्ध हों तो पहली निराई, बुवाई के 20–25 दिन बाद और दूसरी 35–40 दिन बाद करें।
- मसूर, दाने वाली मटर, चनें में सिंचित दशा में फ्लूक्लोरोलिन 1.7 लीटर अथवा ट्राईफलूरोलिन शाखनाशी की 1.5 लीटर मात्रा को 750–800 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई से पूर्व छिड़काव करने से खरपतवारों का नियंत्रण हो जाता है।
- नाइट्रोजन की बचत हेतु दलहनी फसलों में फसल के अनुसार अनुमोदित प्रजाति में रसायन से बीज उपचार के बाद राइजोबियम कल्चर से बीज उपचार करें।

उद्यान प्रबन्धः

- आलू में पछेती झुलसा रोग हेतु मौसम अनुकूल है। तथा क्रांतिक स्तर को पार कर चुका है अतः किसान भाईयो को सलाह दी जाती है कि मैनकोजेब 2.5 ग्रा0 / ली0 दर से तुरंत छिड़काव करें। यह छिड़काव टमाटर की फसल पर भी करें।
- गोभी वर्गी फसलों में पत्ति धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्राम / ली0 की दर से छिड़काव करें।
- सिंचित घाटी क्षेत्रों में मेथी, पालक तथा हरे पत्ते एवं मसाले के लिए धनियां की फसल में सिंचाई कर समय–समय पर गुड़ाई करे।
- पर्वतीय क्षेत्रो में यदि पूर्व में पॉलीहाउस के भीतर सब्जी राई–पौध का प्रतिरोपण हुआ हो तो उपयुक्त नमी की अवस्था में यूरिया की टॉपड्रेसिंग कर गुड़ाई करें। यदि पत्ते कटाई हेतु तैयार हों तो बाजार में बिक्रि करें।
- मध्यम पर्वतीय असिंचित क्षेत्रों में जहां ओला गिरने की संभावना कम रहती हो, में अर्किल मटर की बुवाई करे।
- घाटी क्षेत्रो में पूर्व में बोये गये आलू की फसल में पाले के बचाव हेतु समय–समय पर सिंचाई करते रहे।
- सिंचित घाटियों में यदि प्याज की पहाडी किस्मो की पौध तैयार हो गयी हो तो प्रतिरोपण करें।
- पात गोभी में हीरक पृष्ठ शलक के नियंत्रण हेतु क्लोरान्ट्रानिलीप्रोले 18.5 एस0सी0 50 मि0ली0 / है0 या इन्डोक्साकार्ब 15.8 इसी 266मि0ली0 / है0 की दर से छिड़काव करें।
- अगामी शीत ऋतु में शीतोष्ण फल पौधों को खरीदने हेतु पंजीकृत पौधशाला अथवा विश्वविद्यालय अथवा राजकीय नर्सरी में सुरक्षित करें।
- सेब, नाशपाती, आड़ू, प्लम, खुमानी में बिमारियों एवं रोगों के नियंत्रण हेतु कटाई–छटाई उपरांत प्रयुक्त रसायनों का प्रयोग करें।
- सेब तथा गुठलीदार फलों में तना विगलन रोग की रोकथाम के लिए प्रभावित सेब तथा गुठलीदार फलों के तनों के चारों तरफ मिट्टी हटाएँ जिससे धूप की किरणें ग्रसित भाग पर पड़े। प्रभावित छाओं को हटाकर इसमें चौबटिया पेस्ट लगाकर मिट्टी से ढक दें। इसके अलावा 0.3 प्रतिशत कॉपरऑक्सीक्लोराइड की प्रति पौधा में ड्रैंचिंग करें।
- सेब, नाशपाती, आड़ू, प्लम, खुमानी आदि समस्त शीतोष्ण फलों के बीजों को नर्सरी में बोने हेतु अवशीतन करें।
- शीतोष्ण फल वृक्षों में थाले बनाने का काम प्रारम्भ करें तथा पेड़ के तनों पर चूना + कॉपरऑक्सीक्लोराइड + अल्सी का तेल (30 कि0ग्रा0 चूना + 500 ग्राम कॉपरऑक्सीक्लोराइड + 500 मि0ली0 अल्सी का तेल + 100 लीटर पानी में) मिलाकर जमीन से 2–3 फीट की ऊँचाई पर तनों की पुताई करें।
- खाद, उर्वरक तथा अन्य रसायनों का प्रयोग कटाई–छटाई के उपरान्त शुरू करें।
- ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में सेब, नाशपाती, आड़ू, प्लम, खुमानी आदि शीतोष्ण फल वृक्षों में कटाई–छटाई शुरू करें।
- सेब एवं अन्य गुठलीदार फल पौधों को आगामी शीतऋतु में रोपण हेतु लेआउट तथा गढ्ढों की खुदाई का काम प्रारंभ करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें। गाय–भैंस को शीतला रोग (रिंडर पेस्ट) का टीका लगवाए।
- पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।
- ठंड में पशुओं के आहार में तेल और गुड़ की मात्रा बढ़ा दें। अधिक ठंड की स्थिति में पशुओं को अजवाइन और गुड़ दें।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें।
- पहाड़ी क्षेत्रों में पशुशाला में गर्मी हेतु हीटर का उपयोग करें। तथा अंगेठी का उपयोग धुंआँ निकलने के बाद कर सकते हैं।
- मुर्गियों के आवास के तापमान का अनुरक्षण करें।
- पशुओं को धान की कन्नी आहार के रूप में दें। जिससें उन्हें उर्जा और गर्मी मिलती है।
- इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।

- जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पष्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर